Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 2 | (April – June 2026)

हिमाचल प्रदेश के मंडी जनपद के सराज क्षेत्र की लोक संस्कृति का साहित्यिक अध्ययन

कुशाल सिंह
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय सराज, लम्बाथाच

शोध सारांश

हिमाचल प्रदेश में लोक साहित्य और लोक संस्कृति अत्यंत समृद्ध है। हिमाचल को देवभूमि कहा जाता है। यहाँ की संस्कृति में देव परंपरा, लोक भाषा और धार्मिक परंपरा की अपनी विशिष्ट पहचान मिलती है। यहाँ की लोक और देव संस्कृति में धार्मिक आस्था और सामाजिक संबंधों की अपनी विशिष्ट पहचान है। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले का सराज क्षेत्र अपनी लोक परंपरा तथा सामाजिक जीवन के कारण अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। सराज की लोक संस्कृति सामाजिक संबंधों तथा धार्मिक आस्था की भावना का जीवंत दस्तावेज है। सराज की लोक संस्कृति में लोक गीतों, लोक जीवन की संवेदनाओं, सामाजिक संबंधों, प्रकृति, प्रेम, देव आस्था और सामाजिक जीवन का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। सराज की लोक संस्कृति लोक साहित्य और लोक जीवन की सामूहिक चेतना को समृद्ध बनाती है। यह शोधपत्र हिंदी साहित्य में लोकबोध तथा स्थानीय ज्ञान परंपराओं की भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। हिंदी साहित्य ने लोक साहित्य को अभिव्यक्ति देकर स्थानीय ज्ञान को संरक्षित और संप्रेषित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। यह अध्ययन प्रतिपादित करता है कि लोकबोध साहित्य को सामाजिक यथार्थ से जोड़ता है तथा समकालीन विमर्श को मानवीय और जनोन्मुख बनाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में मंडी जनपद के सराज क्षेत्र के लोक साहित्य के सांस्कृतिक और धार्मिक स्वरूप की विशेषताओं तथा वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द: लोक संस्कृति, सराज, मंडी, हिमाचल प्रदेश, लोकगीत, लोक साहित्य, लोक नाटियाँ, धरोहर।

शोध आलेख -

हिमाचल प्रदेश को देवभूमि के नाम से जाना जाता है। यहाँ की संस्कृति में लोक जीवन और धार्मिक परंपरा का गहरा सम्बन्ध देखने को मिलता है। हिमाचल में अनेक बोलियाँ प्रचलित हैं, जिनमें मंडी जनपद की सराजी बोली का सराज क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान है। सराज क्षेत्र में बोली जाने वाली यह बोली स्थानीय लोगों की सांस्कृतिक धरोहर की पहचान करवाती है। "सराजी बोली" मंडी जिले के सराज क्षेत्र के अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाती है। इसे पश्चिमी पहाड़ी बोली में रखा जाता है। इस बोली में स्थानीय संस्कृति, लोक जीवन और सामाजिक चेतना का विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है। लोक साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण अंग होता है। यह जनजीवन की भावनाओं, परंपराओं तथा सामाजिक अनुभवों को अभिव्यक्त करता है। लोक संस्कृति जनसाधारण के जीवन की वह सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है, जिसमें उनके विश्वास, आचार–विचार, परंपराएँ, लोककला, लोक साहित्य और सामाजिक व्यवहार समाहित होते हैं। ये पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं। हिमाचल प्रदेश का सराज क्षेत्र लोक संस्कृति की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध माना जाता है। यहाँ के लोकगीत, लोककथाएँ तथा धार्मिक परंपराएँ क्षेत्रीय जीवन की वास्तविक झलक प्रस्तुत करती हैं। सराज क्षेत्र का लोक साहित्य प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक आस्था, कृषि जीवन तथा सामाजिक संबंधों को अत्यंत सहज और भावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त करता है। वर्तमान समय में आधुनिकता और पाश्चात्य प्रभाव के कारण लोक संस्कृति पर प्रभाव पड़ रहा है, इसलिए इसके संरक्षण की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।

मंडी जनपद के सराज क्षेत्र का परिचय

सराज क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के मंडी जनपद में स्थित एक महत्वपूर्ण पर्वतीय क्षेत्र है। यह क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुंदरता, देव संस्कृति तथा लोक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की प्रमुख भाषा सराजी बोली है, जो स्थानीय लोक साहित्य का मुख्य माध्यम है। यह क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुंदरता, देव संस्कृति, लोकगीतों, नाटियों और धार्मिक परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र मंडी जिले के उत्तर–पूर्व भाग में स्थित है। इस क्षेत्र में जंजैहली, थुनाग, बग्स्याड, बागाचुनौगी, चियुनी, छत्तरी, गाड़ा गुसैन, बाली चौकी तथा थाची का पहाड़ी क्षेत्र पड़ता है। यह ऊँचे पर्वतों, घने जंगलों, नदियों और घाटियों से घिरा हुआ है। यहाँ का प्राकृतिक वातावरण अत्यंत आकर्षक और मनोरम है। सराज क्षेत्र के लोगों द्वारा "सराजी बोली" बोली जाती है। यहाँ की लोक संस्कृति और लोक परंपरा अत्यंत समृद्ध हैं। इस क्षेत्र का सामाजिक जीवन अत्यंत सामूहिक और परंपरागत है। यहाँ की संस्कृति में देव आस्था, परंपरागत जीवन पद्धति, ग्राम्य जीवन तथा कृषि व्यवस्था प्रमुख आधार हैं। सराज क्षेत्र में आज भी लोक परंपराएँ सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग बनी हुई हैं।

सराज घाटी एक अत्यंत सुंदर और रमणीय स्थल के रूप में जानी जाती है। यहाँ की मनमोहक घाटियाँ और शांत वातावरण पर्यटन की दृष्टि से इसे विशेष बनाते हैं। आज सराज को हिमाचल प्रदेश में पर्यटन का उभरता केंद्र माना जाता है। यहाँ की वादियाँ पर्यटकों को प्रकृति के निकट ले जाती हैं। शिकारी माता का मंदिर प्रसिद्ध धार्मिक और पर्यटन स्थल है। तुगांसी गढ़, शेटा धार, मगरू महादेव, देव मतलोडा, कमरुनाग झील, चुन्ज्वाला गढ़, मगरू मानगढ़ क्षेत्र जैसे अनेक ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल पर्यटकों के लिए आकर्षण के केंद्र हैं। यहाँ प्राकृतिक सुन्दरता और धार्मिक आस्था में ऐतिहासिक धरोहर और लोक संस्कृति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

सराजी बोली लोक साहित्य के प्रमुख रूप:

लोक साहित्य जनसामान्य के जीवन से जुड़ा साहित्य होता है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा द्वारा एक व्यक्ति से दूसरे तक पहुँचता है। लोक साहित्य किसी भी समाज की सामूहिक चेतना का दर्पण होता है। इसमें लोकजीवन की आत्मा निहित होती है। सराज की संस्कृति में देव परंपरा का विशेष महत्व है। सराज का लोक साहित्य हिमाचल की सांस्कृतिक परंपरा का महत्वपूर्ण भाग है। इस लोक साहित्य में स्थानीय लोक जीवन, लोक विश्वास, देव संस्कृति, रीति-रिवाजों और सामाजिक परंपरा का जीवंत स्वरूप देखने को मिलता है। इसमें लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोक नाटी और लोक संस्कृति का वर्णन मिलता है। सराज का लोक साहित्य जनसामान्य के जीवन से जुड़ा है। इसमें लोक साहित्य का निम्नवत स्वरूप देखने को मिलता है।

सराज में प्रचलित लोक गीत

लोकगीत लोक जीवन की आत्मा होते हैं। सराज क्षेत्र के लोकगीतों में हिमाचल की पहाड़ी संस्कृति की अमूल्य धरोहर की परख देखने को मिलती है। इनमें सराज की संस्कृति की झलक मिलती है। ये लोकगीत मौखिक परंपरा में गाए जाते हैं। मेले और शादी समारोहों में ये सामूहिक रूप से गाए जाते हैं और लोग नाचते हैं। इन्हें ढोल, नगाड़ों, शहनाई आदि वाद्ययंत्रों के साथ प्रस्तुत किया जाता है। इन गीतों में लोगों के सामूहिक उल्लास, देव संस्कृति और लोक जीवन की सहजता का चित्रण मिलता है। सराजी लोकगीतों में स्थानीय भाषा और बोलियों के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इससे लोकगीतों में आत्मीयता और सहजता आती है। इनमें देवी–देवताओं के प्रति श्रद्धा और आस्था का विशेष स्थान है।

"ढोल बजे रे सराजे दे, नाचे सारा गाँव,

देवता दे आंगने आई, खुशियों दी छाँव ..."

इसमें सामूहिक उल्लास, देव आस्था तथा सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति मिलती है। सराजी लोकगीतों में पर्वत, नदियों, जंगल और प्रकृति का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है। इन गीतों में लय और संगीत का विशेष महत्व रहता है। ढोल-नगाड़ों के साथ इनका आनंद लिया जाता है। इन गीतों में सामाजिक सम्बन्ध, पारिवारिक जीवन और सामुदायिक एकता की झलक मिलती है। ये गीत विशेष धार्मिक आयोजनों के अवसर पर गाए जाते हैं।

शादी–विवाह के अवसर पर पारम्परिक लोकगीत गाए जाते हैं। इनमें प्रेम और विरह द्वारा मानवीय भावनाओं को व्यक्त करने वाले गीत गाए जाते हैं। ये विवाह गीत केवल पारिवारिक संस्कार नहीं, बल्कि सामूहिक अवसर होते हैं। इन गीतों में हँसी–मजाक, आशीर्वाद, प्रेम, विदाई और पारिवारिक भावनाओं का सुंदर चित्रण मिलता है।

"बन्ना मेरा सजदा जावे,

सिर ते सेहरा सोहे,

ढोल नगाड़े बाजण लागे,

घर विच खुशियाँ होवे।

इन गीतों में मेहंदी रस्म गीत, बारात स्वागत गीत, विदाई गीत और हँसी–मजाक के गीत विवाह के शुभ अवसर पर गाए जाते हैं। ये विवाह गीत सराज की लोक संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग हैं। इसके अलावा मेले और त्योहारों के अवसर पर स्थानीय बोली में अनेक प्रचलित लोकगीत मनोरंजन का प्रमुख साधन माने जाते हैं। इन गीतों को ढोल, नगाड़े, शहनाई और अन्य वाद्ययंत्रों को बजाकर आनंद लिया जाता है। ये लोकगीत मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक संबंधों, पारिवारिक और सांस्कृतिक परंपरा को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का माध्यम हैं। आज लोक संस्कृति और लोकगीतों को संरक्षण की आवश्यकता है तथा नयी पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ा जाना चाहिए।

लोककथाएँ

लोककथाएँ किसी भी समाज की सांस्कृतिक चेतना और लोक जीवन की अमूल्य धरोहर होती हैं। ये पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से आगे बढ़ती हैं। ये समाज की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने का कार्य करती हैं। सराज क्षेत्र की लोककथाएँ यहाँ की लोक संस्कृति और लोक जीवन का दर्पण हैं। सराज क्षेत्र की लोककथाओं में देव कथा और धार्मिक मान्यताओं का वर्णन मिलता है। ये कथाएँ देवी-देवताओं, लोक विश्वास, प्रकृति और सामाजिक जीवन से जुड़ी होती हैं। सराज में देव परंपरा अत्यंत अनूठी है। यहाँ शिकारी माता की लोककथा, कमरूनाग देवता की कथा, बूढ़ी नागिन की कथा और अनेक देवताओं की यात्रा कथाएँ देवी–देवताओं के प्रति गहरी आस्था भावना को प्रकट करती हैं। इनमें स्थानीय लोक भाषा का प्रयोग मिलता है।

लोककथाएँ क्षेत्र की सांस्कृतिक चेतना तथा नैतिक मूल्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी पहुँचाने का माध्यम हैं। इनमें स्थानीय देवी-देवताओं, वीर पात्रों तथा सामाजिक घटनाओं का वर्णन मिलता है। इन कथाओं में देवताओं, प्रकृति, वीरता, आस्था, लोक विश्वास और ग्रामीण जीवन की झलक मिलती है। इनमें देवता और चरवाहा की लोककथा, सात ग्वालिन बहनों की कथा, नाग देवता की कथा, वीर योद्धाओं की कथा, भूत-प्रेतों की कथा, प्रेम कथा और सामाजिक जीवन का वर्णन है।

ये लोककथाएँ केवल मनोरंजन नहीं करतीं, बल्कि नैतिक उपदेश भी प्रदान करती हैं। सत्य, ईमानदारी, परिश्रम, सहयोग और श्रद्धा जैसे मूल्यों का सन्देश इन कथाओं में मिलता है।

माता शिकारी का मंदिर सराज क्षेत्र की लोक आस्था का प्रमुख केंद्र है। माता शिकारी देवी की कथा का सम्बन्ध महाभारत काल से जोड़ा जाता है। लोककथा के अनुसार पांडव अज्ञातवास के दौरान इस क्षेत्र में आये थे। पांडव हिरण का शिकार करते समय इस स्थल पर पहुँचे तो माता ने उन्हें दर्शन दिया और आशीर्वाद दिया कि वे धर्मस्थापना के लिए होने वाले युद्ध में विजयी होंगे।

"पाँचों पांडव आये थे, शिकारी माता के द्वार,

माता ने वरदान दिया, जीतों धर्म की धार।"

यह कथा वीरता और धर्म की जीत का प्रतीक है। यह कथा लोक परंपरा और लोक विश्वास पर आधारित है। यह लोककथा सांस्कृतिक और लोक साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

इसके अतिरिक्त देव कमरुनाग को इस क्षेत्र में बड़े देव की संज्ञा प्राप्त है। हिमाचल प्रदेश की प्राकृतिक झीलों में से एक कमरुनाग की झील पूजनीय है। इस लोक देवता की कथा को महाभारत काल से जोड़ा जाता है। लोक मान्यता के अनुसार कमरुनाग का सम्बन्ध महाभारत काल के महान योद्धा रत्न यक्ष से जोड़ा जाता है, जिनसे भगवान् श्री कृष्ण ने शीश दान माँग लिया था। शीश दान से पहले उन्होंने महाभारत का युद्ध देखने की इच्छा जताई थी तो श्री कृष्ण ने उन्हें इस स्थल पर स्थापित कर युद्ध देखने का वरदान दिया था। इस झील को अत्यंत पवित्र माना जाता है।

"कमरुनाग दे दरवारे, बादल घेरे आकाश,

कृपा कर दे नाग देवता, भर दे खेत खलिहान।

लोक मान्यता के अनुसार कमरुनाग वर्षा के देवता हैं, जो इस क्षेत्र के लोगों की मन्नत को पूरा करते हैं। यह केवल धार्मिक कथा नहीं, बल्कि त्याग, वचन पालन और लोक विश्वास की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर मानी जाती है। इन देव कथाओं में लोक आस्था, प्रकृति चेतना, सामाजिक न्याय, देव संस्कृति और सामूहिक जीवन की झलक मिलती है।

लोकगाथाएँ

लोकगाथाएँ ऐतिहासिक घटनाओं तथा लोकनायकों के जीवन से संबंधित होती हैं। ये समाज को प्रेरणा प्रदान करती हैं। सराज घाटी की लोकगाथाएँ देव कथा, वीर कथा, नाग कथा, प्रकृति और प्रेम कथाओं से समृद्ध हैं। इन लोकगाथाओं में वीरता, प्रेम, लोक विश्वास और सामाजिक आस्था का भाव वर्णित मिलता है। ये पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से गाई और सुनाई जाती हैं। लोकगाथाएँ वे गीतात्मक कथाएँ होती हैं जिनमें वीरता, प्रेम, त्याग, देव आस्था और लोक जीवन का भाव वर्णित मिलता है। इनमें देव संस्कृति, पर्वतीय जीवन और लोक भाषा की झलक स्पष्ट मिलती है। सराज क्षेत्र की देव गाथाओं में शिकारी माता की गाथा, कमरुनाग देवता की गाथा, विष्णुदेव मतलोडा की गाथा, बूढ़ी नागिन की गाथा, देव चुन्ज्वाला की गाथा, देव मतलोडा की गाथा, मगरू महादेव की गाथा तथा अन्य देवी-देवताओं की गाथाएँ इस क्षेत्र में अत्यंत प्रचलित मिलती हैं। वीर गाथाओं में वीरों, शिकारियों तथा बहादुर योद्धाओं का वर्णन मिलता है। इन प्रेम गाथाओं में प्रेम, प्रकृति, विरह और भावनात्मक संबंधों का चित्रण वर्णित मिलता है।

"ऊँचे पहाड़ों बीच बसेरा, सराजे की शान,

ढोल नगाड़े गुंजन लागे, देव करे कल्याण,

नाटी पाऊँ सारे मिलके, गावे लोक कहानी,

वीर पुरख्याँ री गाथा गावे, खुश होवे धरती रानी।

इन गाथाओं में सराजी बोली का प्रयोग होता है, जिससे लोक जीवन की वास्तविकता और आत्मीयता का बोध होता है। इनमें स्थानीय देवता की महिमा, चमत्कार, स्थानीय राजाओं के युद्ध, देव शक्तियों और लोक विश्वास का वर्णन किया जाता है। इन गाथाओं में क्षेत्रीय इतिहास और लोक विश्वास का मिश्रण मिलता है। ये लोकगाथाएँ सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान को बढ़ावा देती हैं।

देव संस्कृति और लोक नृत्य

सराज क्षेत्र में देव परंपरा का विशेष महत्व है। यहाँ के मेले, उत्सव तथा धार्मिक अनुष्ठान लोक साहित्य से गहरे रूप से जुड़े हुए हैं। यहाँ के लोगों का जीवन देवी–देवताओं की धार्मिक मान्यताओं से जुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि प्राचीन समय में हिमालय की पहाड़ियों में देवताओं का निवास था। प्रत्येक पहाड़ी का अपना देवता और गढ़ था। ये देवता अपने-अपने क्षेत्र की रक्षा करते थे और लोगों को न्याय, वर्षा, समृद्धि और सुरक्षा प्रदान करते थे। सराज क्षेत्र के गढ़ लोक संस्कृति और देव परंपरा के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। यहाँ देवी–देवताओं को समाज का संरक्षक माना जाता है। यहाँ प्रत्येक गाँव का अपना अलग देवी–देवता होता है। ये गाँव के रक्षक और सामाजिक न्याय करने वाले होते हैं। लोक देव रथ और देवयात्राओं के साथ गाँव–गाँव जाकर अपनी देव संस्कृति की झलक दिखाते हैं और आनंद उठाते हैं। देव संस्कृति सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करती है।

नाटी सराज क्षेत्र का प्रसिद्ध लोक नृत्य है। इन नाटी गीतों में प्रेम, प्रकृति और सामूहिक जीवन की झलक दिखाई देती है। नाटी केवल लोक नृत्य नहीं, बल्कि सामूहिक आनन्द की अभिव्यक्ति है। सराज में नाटियाँ विवाह, मेले, देव उत्सव और त्योहारों पर प्रस्तुत की जाती हैं। इसमें वाद्ययंत्रों को बजाकर सामूहिक नृत्य किया जाता है। यह सामूहिक उत्साह और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक होता है। इसमें देव नाटी, देवयात्रा, मेलों और धार्मिक उत्सवों पर ये नाटियाँ प्रस्तुत की जाती हैं, जिनमें स्थानीय देवताओं की स्तुति की जाती है। हिमाचल की देव परंपरा में गूर, कारदार, बाजा/बाजन्तरी और देवता की प्रमुख भूमिका रहती है। विवाह समारोह में हास्य, खुशी और पारिवारिक संबंधों का चित्रण होता है। फसल कटाई, मेलों और त्योहारों पर समाज के सामूहिक जीवन की झलक देखने को मिलती है। सराज की नाटी हिमाचल की लोक संस्कृति में प्रमुख पहचान रखती है। इसमें लोक जीवन की सरलता, देव आस्था और सामूहिक आनंद का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। इसमें लोक जीवन की सरलता और सामूहिक चेतना का बोध होता है। लोक नाटी सराज क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान और लोक चेतना का बोध करवाती है।

सराज के लोक साहित्य में लोकोक्तियाँ और लोक कहावतें:

सराज क्षेत्र का लोक साहित्य मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों से समृद्ध है। इसमें लोक जीवन के दीर्घ अनुभव, बुद्धिमत्ता तथा सामाजिक मूल्यों की अभिव्यक्ति मिलती है। ये कम से कम शब्दों में गहरे अर्थ प्रस्तुत करती हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी लोक ज्ञान का संचार करती हैं। इनमें लोक जीवन के अनुभव और व्यावहारिक ज्ञान का सार रहता है। इससे सामाजिक संस्कृति और परंपरा का संरक्षण होता है। सराज की लोक कहावतें और लोकोक्तियाँ लोक जीवन के

अनुभव, ज्ञान और सांस्कृतिक चेतना की अमूल्य धरोहर हैं। इनमें सामाजिक सम्बन्ध, नैतिकता, लोकबुद्धि और जीवन दर्शन का सार मिलता है। ये न केवल भाषा को समृद्ध बनाती हैं, बल्कि सराज की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करती हैं।

सराज की "सराजी बोली" में अनेक लोक कहावतें प्रचलित हैं, जिनमें पहाड़ी लोक परंपरा का वर्णन है। खाली भांडा घंन्ना बजदा, जैठे रा दिन ते पूहे री रात, कदी नी टिकदी, पहाडा दा पानी ते पहाडा दी जवानी, पहाडा दे काम नी आयुदी, पैरा थाले जमीन खिसकनी और सर ते पानी लांघना इत्यादि लोक कहावतें प्रचलित हैं। ये लोक जीवन को अभिव्यक्त करती हैं और सराजी बोली को समृद्ध करती हैं। इनसे लोक साहित्य की जीवन्तता और मौलिकता बनी रहती है। ये लोक कहावतें सराज के लोक साहित्य की महत्वपूर्ण धरोहर हैं।

सांस्कृतिक महत्व

सराज की देव संस्कृति केवल धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि कला और सांस्कृतिक पहचान का केंद्र है। सराज की लोक संस्कृति आज भी समाज की अनूठी परंपरा का प्रमुख आधार है।

सराजी लोक साहित्य सामाजिक एकता, धार्मिक सांस्कृतिक पहचान तथा पारंपरिक मूल्यों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह लोकजीवन की संवेदनाओं तथा सामाजिक संबंधों को मजबूत करता है। लोक साहित्य के माध्यम से नई पीढ़ी अपनी संस्कृति, भाषा तथा परंपराओं से परिचित होती है। यह सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का महत्वपूर्ण माध्यम है। हिमाचल को देवभूमि कहा जाता है और सराज की देव संस्कृति उसकी जीवंत झलक प्रस्तुत करती है। सराजी संस्कृति केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कृति और परंपरा को संरक्षित रखने का माध्यम है।

निष्कर्ष

सराज का लोक साहित्य हिमाचली संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। इसमें लोक जीवन की सरलता, प्रकृति प्रेम, धार्मिक आस्था, सामाजिक मूल्य और सामूहिक चेतना का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। लोक साहित्य के माध्यम से नई पीढ़ी अपनी संस्कृति तथा पारम्परिक मूल्यों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह लोक जीवन की संवेदनाओं तथा सामाजिक संबंधों को मजबूत करता है। मंडी जनपद के सराज क्षेत्र का लोक साहित्य सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध एवं महत्वपूर्ण है। इसमें लोकजीवन, प्रकृति, धार्मिक आस्था तथा सामाजिक मूल्यों का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। आधुनिक समय में लोक साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी रह सकें। लोक साहित्य न केवल सराज की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित बनाता है, बल्कि हिमाचल प्रदेश की लोक धरोहर को भी समृद्ध बनाता है।

संदर्भ

1. सुदर्शन वशिष्ट 2019 हिमाचली लोक साहित्य हिमाचल कला, संस्कृति एवं भाषा शिमला।
2. डॉ पदम् चंद कश्यप 2018 हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति निर्मल पब्लिकेशन्स।
3. बी. एल. कपूर 2014 मंडी जनपद का सांस्कृतिक इतिहास अगम कला प्रकाशन दिल्ली।
4. प्रो. राधेश्याम सिंह 2024 लोक साहित्य और संस्कृति लोक भारती प्रकाशन।
5. कृष्ण देव उपाध्याय 2009 लोक संस्कृति की रूपरेखा लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद।